संशोधित

शोध प्रबन्ध की संक्षिप्त रूप–रेखा (Synopsis)

शोध प्रबन्ध का शीर्षक

पण्हवागरणाइंसुत्त (प्रश्नव्याकरण सूत्र) का दार्शनिक अध्ययन

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, भोजपुर के अन्तर्गत

पीएच.डी. (प्राकृत एवं जैनशास्त्र) उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की संक्षिप्त रूप–रेखा

संकाय – मानविकी

विषय– प्राकृत एवं जैनशास्त्र

12/04/21

शोध-निर्देशक

(डॉ० दुधनाथ चौधरी)

अध्यक्ष

स्नातकोत्तर प्राकृत एवं जैनशास्त्र विभाग

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

भोजपुर (बिहार) - 80230

शोध छात्रा

(प्रियंका कुमारी)

स्नातकोत्तर प्राकृत एवं जैनशास्त्र विभाग

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

भोजपुर (बिहार) - 802301

Scanned with OKEN Scanner

शीर्षक : पण्हवागरणाइंसुत्त (प्रश्नव्याकरण सूत्र) का दार्शनिक अध्ययन

विषय परिचय :–

अर्धमागधी आगम के बारह अंग ग्रन्थ हैं, जिसमें 'पण्हवागरणाइंसुत' भगवान् महावीर द्वारा अर्थतः प्रतिपादित द्वादशांगी में दसवें अंग के रूप में परिगणित है। वर्त्तमान में यह सूत्र ग्रन्थ दो मुख्य विभागों में विभक्त है– आश्रव द्वार और संवर द्वार। प्रथम विभाग में हिंसा आदि पाँच आश्रवों का और दूसरे विभाग में अहिंसा आदि पाँच संवरों का वर्णन किया गया है।

महत्त्व :–

'पण्हवागरणाइंसुत्त' में वर्णित आश्रव और संवर सात तत्त्वों अर्थात् नौ पदार्थों में परिगणित हैं। अध्यात्म दृष्टि मुमुक्षु जनों के लिए इनका बोध होना आवश्यक ही नहीं, बल्कि सफल साधना के लिए अनिवार्य भी है। आश्रव जन्म मरण रूप भव परम्परा का प्रधान कारण है और संवर आश्रव निरोध विशुद्ध आत्मदशा मुक्ति का मुख्य कारण है। इन दोनों तत्त्वों को जान लेना मनुष्य के लिए आवश्यक है। यह मानव जीवन की सफलता की कुंजि है।

विश्लेषण :–

अर्धमागधी आगम के अंग ग्रन्थ प्रश्नव्याकरणसूत्र में दो खण्ड हैं। प्रथम खण्ड आश्रव द्वारों में हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह रूप पापों का तथा संवर द्वारों में अहिंसादि पाँच व्रतों का विमोचन किया गया है। हिंसक जातियों के पेशेवरों में शौकरिक–शूकरों का व्यापार और शिकार करनेवाले, मच्छबंध– मत्स्य व्यापार करनेवाले, शाकुनिक–चिंड़िमार, व्याघ, बागुरिक– जीव जन्तुओं को पकड़कर आजिविका करने वाले व्यक्तियों का निर्देश किया गया है।

Scanned with OKEN Scanner

वास्तव में प्रश्नव्याकरण का अर्थ है स्वसमय–स्वसिद्धान्त और पर समय– पर सिद्धान्त सम्बन्धी प्रश्नोत्तर के रूप में नाना विद्याओं, तन्त्र–मन्त्र एवं दार्शनिक बातों का निरूपण है। पर इस व्युत्पत्ति के अनुसार इस श्रुतांग में विषय विवेचन का अभाव है। अतः यह अनुमान सहज में ही किया जा सकता है कि इसका प्राचीन रूप वही था, जिसका आभास प्रश्न विवेचन के रूप में नान्दीसूत्र में मिलता है। समय के प्रभाव से इसका वास्तविक मूलरूप लुप्त हो गया है। इसमें अनेक जातियों, नाना प्रकार के आभूषण, उपमा, विनय, शील और तप आदि का प्रचुर मात्रा में विवेचन मिलता है। इन्हीं विषय वस्तुओं को ध्यान में रखते हुए मैं उपर्युक्त विषय अर्थात् 'पण्हवागरणाइंसुत्त (प्रश्नव्याकरण सूत्र) का दार्शनिक अध्ययन' का चयन की हूँ।

शोध विधि (Methodology) :–

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को विस्तार एवं गति देने हेतु शोध विधि के रूप में दार्शनिक एवं समीक्षात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा।

शोध के श्रोत (Sources of Research) :–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु विभिन्न प्रकार के अंतः एवं वाह्य साक्ष्यों का उपयोग किया जायेगा। यथा– आवश्यक ग्रन्थों का अवलोकन, मनन, चिन्तन के साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों का अवलोकन, व्यक्ति साक्षात्कार तथा आवश्यक परिभ्रमण भी संभव होगा।

परिकल्पना (Hypothesis) :–

इस शोध की पूर्णता इन आदर्शों को अभिव्यक्त करने में सक्षम होगी जो दार्शनिक अध्ययन के लिए आवश्यक होती है तथा आगम के अंग ग्रन्थ के अवधारणाओं का दार्शनिक, तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक उपभावनाएँ को भी अपनाया जा सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य की रूप–रेखा तैयार करने हेतु जिन आवश्यक ग्रन्थों एवं अन्य साधनों का उपयोग किया गया है, वे इस प्रकार हैं –

Scanned with OKEN Scanner

सहायक ग्रन्थ (Reference Books) :–

1. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री
2. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ० जगदीशचन्द्र जैन
3. भारतीय संस्कृति के विकास में जैन धर्म का योगदान – डॉ० हीरालाल जैन
4. जैनागम साहित्य में भारतीय समाज – डॉ० जगदीश चन्द्र जैन
5. जैन दर्शन स्वरूप एवं विश्लेषण – श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री
6. अर्धमागधी आगम के संकलित गद्य एवं पद्य – डॉ० सी०डी० राय एवं डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह
7. आचारांग सूत्र – श्रीहर्मन जैकोबी
8. सूत्रकृतांग सूत्र – श्री मधुकर मुनि
9. समवायांग सूत्र – श्री मधुकर मुनि
10. स्थानांगसूत्र – श्री आगम प्रकाशन समिति, व्यायावर
11. अनुत्तरोपपातिक दशा सूत्र – डॉ० पी०एल० वैद्य
12. अंतःकृद्दाशासूत्र – डॉ० पी०एल० वैद्य
13. प्रश्नव्याकरण सूत्र – श्री मधुकर मुनि
14. उत्तराध्ययन सूत्र – श्री आर०डी० वेदकर
15. औपपातिक सूत्र – श्री एन०जी० शुरू
16. पाइय सद्द महण्णवो – मोतीलाल वनारसीदास द्वारा प्रकाशित
17. उपासकदसाओ सूत्र – श्री आगम प्रकाशन समिति व्यावर द्वारा प्रकाशित

Scanned with OKEN Scanner

शोध का स्वरूप (Research Design) :–

सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध की विस्तृति में लगभग निम्नलिखित अध्याय विवर्त्त होंगे –

१. **प्रथम अध्याय**	:	प्रस्तावना
२. **द्वितीय अध्याय**	:	आगम स्वरूप विश्लेषण एवं वर्गीकरण
३. **तृतीय अध्याय**	:	पण्हवागणाइंसुत्त का सामान्य परिचय
४. **चतुर्थ अध्याय**	:	आश्रवद्वार का विवेचन
५. **पंचम अध्याय**	:	संवर द्वार का विवेचन
६. **षष्ठ अध्याय**	:	उपसंहार

सहायक ग्रन्थों की सूची

Bhoudhary
12/04/21
(डॉ० दुधनाथ चौधरी)
शोध–निर्देशक एवं अध्यक्ष
स्नातकोत्तर प्राकृत एवं जैनशास्त्र विभाग
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
भोजपुर (बिहार) – 802301

प्रियंका कुमारी
(प्रियंका कुमारी)
शोध छात्रा
स्नातकोत्तर प्राकृत एवं जैनशास्त्र विभाग
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

Scanned with OKEN Scanner